जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मानुभूति के साथ-साथ सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की सम्यक् पहिचान भी सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये अनिवार्य है।

ह्न क्रमबद्धपर्याय, पृष्ठ : ५६

वर्ष : 28, अंक : 12 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

समयसार सप्ताह का आयोजन

नई दिल्ली : सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी के पावन सान्निध्य में रविवार, दिनांक 16 अक्टूबर से शनिवार, दिनांक 22 अक्टूबर, 2005 तक समयसार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के समयसार पर तलस्पर्शी व्याख्यान कुन्दकुन्द भारती स्थित खारवेल भवन में होंगे। इस अवसर पर विषय से सम्बन्धित शंका-समाधान भी रखा जायेगा। **ह्न अखिल बंसल**

गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालयद्वारा रविवारीय गोष्ठीयों की श्रृखंला में दिनांक 21 अगस्त, 2005 को **उपयोग : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता राज. विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलसचिव डॉ. महावीरप्रसादजी जैन ने की। संचालन विमोश जैन खड़ैरी एवं मंगलाचरण विवेक जैन, सागर ने किया। गोष्ठी में शास्त्री वर्ग से आशीष जैन, मौ तथा उपाध्याय वर्ग से अजय जैन पीसांगन एवं रवीन्द्र महाजन बीड ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

इसी श्रृखंला में दिनांक 28 अगस्त, 2005 को **धर्म के दशलक्षण** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के स्नातक डॉ. विमलकुमारजी जैन, गुढ़ा ने की। संचालन शाकुल जैन, मेरठ एवं मंगलाचरण आदित्य जैन, खुरई ने किया। **ह्न कमलेश एवं संभव जैन**

पं. रतनचन्दजी भारिल्ल को आ. अमृतचन्द्र पुरस्कार

जैनसमाज के दैदीप्यमान नक्षत्र, लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान, अनेकों पुस्तकों के लोकप्रिय लेखक, श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य अध्यात्म रत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जिनका गत 16 जनवरी, 2005 को राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक सम्मान एवं सम्मान में प्रकाशित रतनदीप ग्रन्थ का लोकार्पण हुआ था, उनके साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में किये विशेष अवदान के लिए नव प्रतिष्ठापित आ. अमृतचन्द्र पुरस्कार सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में दिल्ली में प्रदान किया जायेगा। सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये एवं प्रशस्तिपत्र खारवेल भवन में प्रदान किया जायेगा। **ह्न अखिल बसंल**

श्री अशोक बड़जात्या संरक्षक मनोनीत

श्रवणबेलगोला स्थित भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक हेतु गठीत उच्च स्तरीय राष्ट्रीय पदाधिकारी परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक के रूप में श्री अशोकजी बड़जात्या, इन्दौर को मनोनीत किया गया है; एतदर्थ आपको हार्दिक बधाई !

समिति के अन्य संरक्षकों में श्रीमती इन्दु जैन (टाईम्स ऑफ इण्डिया), श्रीमती सरयू दफ्तरी मुम्बई, श्री गजेन्द्र पाटनी (पाटनी कम्प्यूटर्स), श्री रतनलालजी पाटनी (आर.के.मार्बल), श्री शंभुकुमारजी कासलीवाल मुम्बई एवं श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल इन्दौर है।

बैंकाक में धर्मप्रभावना

बैंकाक : यहाँ दिनांक 21 अगस्त, 2005 को रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रूपेशकुमारजी शास्त्री, चिचोली द्वारा विशेष प्रयत्नपूर्वक प्रात: सामूहिक पूजन का आयोजन किया गया। पश्चात् पं. रूपेशजी द्वारा प्रासंगिक प्रवचन के अतिरिक्त एक प्रवचन सम्यग्दर्शन विषय पर भी हुआ।

इसी अवसर पर यहाँ श्री दिगम्बर जैन फैडरेशन एवं श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला की स्थापना की गई। लगभग 77 साधर्मी भाई-बहिनों ने इस कार्यक्रम में धर्मलाभ प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि बैंकाक दि. जैन समाज के इतिहास में इसप्रकार के कार्यक्रम का प्रथम ही आयोजन किया गया।

पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर द्वारा दि. 11 अगस्त से 2 सितम्बर,05 तक राजस्थान में भीलवाड़ा, बोहेडा, लूणदा, कूँण, प्रतापगढ़, घाटोल, खोडन,मेतवाला, डडूका, आँजना, अरथूना, जौलाना, आनन्दपुरी, पालोदा, बड़ीसादड़ी, नौगामा, बोरी, ध्रुवधाम-बांसवाड़ा, तलवाड़ा, कुंभानगर-चित्तौडगढ़ तथा मधुवन सैत्ती-चितौडगढ़ की 21 पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। समस्त स्थानों पर पाठशालाओं का निरीक्षण कर उनके संचालन हेतु उचित मार्गदर्शन दिये गये। साथ ही बंद पाठशालाओं को पुनर्स्थापित किया गया। सभी स्थानों पर पण्डितजी द्वारा पूजन, प्रवचन एवं बाल तथा प्रौढ़ कक्षा के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य

अक्टूबर शिविर की पत्रिका
दिनांक 6 से 15 अक्टूबर, 2005 तक

अक्टूबर शिविर की पत्रिका
दिनांक 6 से 15 अक्टूबर, 2005 तक

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

10

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

अच्छी पड़ोसिनें भी पुण्य से मिलती हैं

पड़ोसिन अम्मा के मुख से 'कलयुगी पड़ोसी धर्म' की बात सुनकर ज्योत्स्ना अचम्भे में पड़ गई। क्या ऐसा भी होता है पड़ोसिनों का व्यवहार ? यदि ऐसी बात है तब तो पड़ोसिनों के साथ भी सोच-समझकर ही व्यवहार करना पड़ेगा और उनसे सावधान भी रहना पड़ेगा, अन्यथा ये तो हमारे घर को भी पलीता दिखा देंगी और हमारे परिवार को नचाकर स्वयं तमाशा देखेंगी।

बहत्तर वर्षीय पड़ोसिन अम्मा शुद्ध-सात्त्विक आहार, विहार और नियमित दिनचर्या पालन करने से अभी भी पूर्ण स्वस्थ हैं। अभी अम्मा की पाँचों इन्द्रियाँ काम करती हैं। उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी है। वह नियमितरूप से प्रात: ५ बजे जागकर वैराग्य वर्द्धक बारह भावनायें, भजन और स्तुतियों का पाठ करती है। नौकर-चाकर होते हुए भी वह यथासंभव अपने नित्यकर्म के सभी काम स्वयं ही करती है।

उसका इकलौता बेटा माँ के प्रति प्रेम, श्रद्धा और भक्ति की पवित्र भावना से काम करने से बहुत मना करता है और आराम करने का आग्रह करता है; इस उम्र में माँ काम करे, यह उसे अच्छा नहीं लगता, उसका वश चले तो वह माँ को पलंग से नीचे पग न रखने दे; .....परन्तु अम्मा का कहना यह है कि बेटा ! बुढ़ापे में हड्डियाँ हिलती-डुलती रहें तो ठीक रहती हैं, अन्यथा वे जाम हो जाती हैं, जकड़ जाती हैं, अकड़ जाती हैं, इसलिए मैं तो अपनी उम्र की बहिनों को भी यही सलाह देती हूँ और मैं स्वयं भी काम के बहाने हाथ-पैर पसार लेती हूँ तथा नौकरों के भरोसे भी हमेशा पूरी तरह नहीं रहना चाहती, क्योंकि नौकर भी कभी-कभी हमारी कमजोरी और मजबूरी देखकर परेशान करने लगते हैं, नौकरों के नखरे भी तो कम नहीं होते।'

अम्मा के पास प्रतिदिन प्रवचन में पहुँचने का साधन तो नहीं है; फिर भी वह घर पर ही कुछ न कुछ स्वाध्याय करके ही भोजन करती है। समय-समय पर निष्पक्षभाव से साधु-संतों और सभी विद्वानों के प्रवचन भी सुनती है, परन्तु अध्यात्म की गहरी पकड़ न होने से स्वाध्याय का फल जो निराकुल सुख-शान्ति है, उससे वह वंचित है।

ज्योत्स्ना के पड़ोस में आ जाने से तो मानो उसके भाग्य ही खुल गये। अच्छी पड़ोसिनें भी पुण्य से ही मिलती हैं। अब अम्मा ज्योत्स्ना के साथ प्रतिदिन प्रवचन में जाने लगी। यद्यपि वह प्रवचनों को खूब ध्यान से सुनती और जो बात समझ में नहीं आती, उसे तत्काल नोट भी कर लेती और प्रवचन के बाद जैसे भी मौका मिलता समताश्री से समाधान भी करा लेती।

अम्मा के हित में एक अच्छी बात यह है कि वह किसी व्यक्ति विशेष या पन्थ विशेष की सीमाओं में बंधी नहीं है। किसे सुने, किसे न सुने ? क्या पढ़े, क्या न पढ़े ? ह्न ऐसे संकुचित विचार उसे पसंद नहीं हैं। उसे वीतरागता की पोषक सभी बातों में आनन्द आता है। अत: वह एक बार तो सबको ही सुनती है, फिर अपने विवेक से हेयोपादेय का निर्णय स्वयं करती है। विकथायें करने का अब उसके पास बिलकुल भी समय नहीं है। वह बार-बार कहती है ह्न ''मैंने जितने वर्ष जी लिया, अब उतने महीने भी स्व-पर हित के लिए मिलना मुश्किल हैं। अंजुली के पानी की तरह समय निरन्तर अपनी गति से बीत रहा है। अत: मैं अब किसी भी प्रपंच में नहीं पड़ती।''

अगले दिन अपने निश्चित समय पर ठीक ८.३० पर प्रवचन प्रारंभ हुआ। समताश्री ने ॐ नम: सिद्धेभ्य: के साथ कल के विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा ह्न ''हमने कल जो वस्तुस्वातंत्र्य के विषय को क्रमबद्धपर्याय और सर्वज्ञता के माध्यम से समझा था, उस विषय में अम्माजी क्रमबद्ध-पर्याय का और अधिक स्पष्टीकरण कराना चाहती हैं। विषय तो अपने आप में महत्त्वपूर्ण है ही तथा और भी अनेक भाई-बहिन नये आये हैं; अत: आज भी सर्वज्ञता और क्रमबद्धपर्याय को ही समझाने का प्रयत्न करेंगे।

'सर्वं जानातीति सर्वज्ञ:' इस व्युत्पत्ति के अनुसार सर्वज्ञ शब्द का अर्थ है सबको जाननेवाला। ''सर्वज्ञ शब्द में जो 'सर्व' शब्द है उसका तात्पर्य त्रिकाल और त्रिलोकवर्ती समस्त द्रव्यों और उनकी समस्त पर्यायों से है। जो त्रिकाल और त्रिलोकवर्ती समस्त द्रव्यों और उनकी समस्त पर्यायों को युगपत प्रत्यक्ष जानता है वह सर्वज्ञ है।

अमृतचन्द्र आचार्यदेव ने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में मंगलाचरण करते हुए लिखा है कि ह्न 'वह परम ज्योति (केवलज्ञान) जयवन्त होवो, जिसमें दर्पणतल के समान समस्त पदार्थमालिका प्रतिभासित होती है। जैसे क्षेत्रान्तर में स्थित घटादि पदार्थ दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं वैसे ही क्षेत्रान्तर में स्थित समस्त पदार्थ केवलज्ञान के विषय होते हैं।'

ज्ञान के दो प्रकार हैं ह्न ज्ञानाकार और ज्ञेयाकार। वैसे तो प्रत्येक ज्ञान ज्ञेयाकार परिणमित होता ही है; किन्तु यदि हम उस ज्ञेयाकार की अपेक्षा को गौण कर ज्ञान को मात्र सामान्यरूप से देखें तो वह ज्ञानाकार प्रतीत होता है। ज्ञेयाकाररूप परिणमन की दृष्टि से देखने पर वही ज्ञान ज्ञेयाकार प्रतीत होता है। इससे सिद्ध होता है कि केवलज्ञान का जो प्रत्येक समय में परिणमन है वह तीन लोक और त्रिकालवर्ती समस्त ज्ञेयाकाररूप ही होता है। केवलज्ञान तीन लोक और त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों को युगपत् जानता है। पण्डित दौलतरामजी ने स्तुति में कहा भी है ह्न

'सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन'

जानना ज्ञान की परिणति है और वह परिणति ज्ञेयाकाररूप होती है, इससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि सर्वज्ञ जानता तो सबको है; पर वह पर को तन्मय होकर नहीं जानता। वे पर को जानते हुए भी निजानंद में ही मग्न रहते हैं। उदाहरणार्थ एक ऐसे दर्पण को लीजिए जिसमें अग्नि की ज्वाला प्रतिबिम्बित हो रही है। आप देखेंगे कि ज्वाला उष्ण है, परन्तु दर्पणगत प्रतिबिम्ब उष्ण नहीं होता। ठीक यही स्वभाव ज्ञान का है। ज्ञान में ज्ञेय प्रतिभासित तो होते हैं, पर ज्ञान-ज्ञेयों से तन्मय नहीं होता। **(क्रमश:)**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 36

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

चौदहवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार के द्रव्यसामान्य-प्रज्ञापनाधिकार पर चर्चा चल रही है। प्रकरण यह चल रहा है कि मनुष्यादि पर्यायों में एकत्वबुद्धि ही पर्यायमूढ़ता है।

इसी प्रकरण में अब आचार्य यह कह रहे हैं कि इन मनुष्यादि पर्यायरूप दुर्दशा के जिम्मेदार हम ही हैं; इसके कर्त्ता, कर्म, करण हम ही हैं। इस दुर्दशा का अभाव करके जो मोक्षपर्याय प्रगट होगी; उसके कर्त्ता-धर्त्ता भी हम ही होंगे; इसमें किसी परद्रव्य अथवा कर्म का दोष नहीं है। परद्रव्य के नाम पर हम अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहें, यह उचित नहीं है। इसे आचार्य १२२वीं गाथा की टीका में स्पष्ट करते हैं ह्न

'प्रथम तो आत्मा का परिणाम वास्तव में स्वयं आत्मा ही है; क्योंकि परिणामी परिणाम के स्वरूप का कर्त्ता होने से परिणाम से अनन्य हैं और जो उसका (आत्मा का) तथाविध परिणाम है, वह जीवमयी ही क्रिया है; क्योंकि सर्वद्रव्यों की परिणामलक्षण क्रिया आत्ममयता (निजमयता) से स्वीकार की गई है; और फिर, जो (जीवमयी) क्रिया है, वह आत्मा के द्वारा स्वतंत्रतया प्राप्य होने से कर्म है। इसलिए परमार्थत: आत्मा अपने परिणामस्वरूप भावकर्म का ही कर्त्ता है; किन्तु पुद्गलपरिणामस्वरूप द्रव्यकर्म का नहीं।'

यहाँ आचार्य ने 'परमार्थत:' इस शब्द का प्रयोग करके यह स्पष्ट किया है कि निश्चय से भगवान आत्मा भावकर्म का ही कर्त्ता है। यहाँ अशुद्धनिश्चयनय की विवक्षा है। इस नय की विवक्षा से रागादिक का कर्त्ता भगवान आत्मा को कहा जाता है। द्रव्यकर्म का कर्त्ता भगवान आत्मा को नहीं कहा गया है। समयसार ग्रन्थ में भी इस आशय को व्यक्त किया गया है।

नाटक समयसार में इस विषय को इसप्रकार स्पष्ट किया गया है ह्न

ज्ञानभाव ज्ञानी करे, अज्ञानी अज्ञान।
द्रव्यकर्म पुद्गल करे, यह निश्चय परवान॥

यह निश्चयनय का कथन है कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप ज्ञानभावों का कर्त्ता ज्ञानी आत्मा है और मोह-राग-द्वेषरूप अज्ञानभावों का कर्त्ता अज्ञानी आत्मा है।

''अब, यहाँ ऐसा प्रश्न होता है कि 'यदि जीव भावकर्म का ही कर्त्ता है तो फिर द्रव्यकर्म का कर्त्ता कौन है ?'

इसका उत्तर इसप्रकार है :- प्रथम तो पुद्गल का परिणाम वास्तव में स्वयं पुद्गल ही है; क्योंकि परिणामी परिणाम के स्वरूप का कर्त्ता होने से परिणाम से अनन्य है और जो उसका (पुद्गल का) तथाविध परिणाम है, वह पुद्गलमयी ही क्रिया है; क्योंकि सर्वद्रव्यों कि परिणाम-स्वरूप क्रिया निजमय होती है ह्न ऐसा स्वीकार किया गया है और फिर जो (पुद्गलमयी) क्रिया है, वह पुद्गल के द्वारा स्वतंत्रतया प्राप्य होने से कर्म है। इसलिए परमार्थत: पुद्गल अपने परिणामस्वरूप उस द्रव्यकर्म का ही कर्त्ता है; किन्तु आत्मा के परिणामस्वरूप भावकर्म का नहीं।

इससे ऐसा समझना चाहिये कि आत्मा आत्मस्वरूप परिणमित होता है, पुद्गलस्वरूप परिणमित नहीं होता।''

द्रव्यकर्म के उदय से भावकर्म हुआ ह्न इसप्रकार कहकर यह अज्ञानी स्वयं आजाद रहना चाहता है। यह मानता है कि मेरी कोई गलती नहीं है। कहता है कि समयसार में भी कहा है कि 'कर्म ही सुलावे, कर्म ही जगावे' परघात नामक कर्म से हिंसा हो गई, वेदकर्म के उदय से व्यभिचार हो गया। ऐसा होने पर तो महा अनर्थ हो जायेगा ? यह तो सांख्यों जैसा अकर्तापन हो गया।

चेतना तीन प्रकार की होती है - ज्ञानचेतना, कर्मचेतना व कर्मफल चेतना। स्वयं का जो ज्ञानस्वभाव है, उसके प्रति आत्मा का चेतना, उसके कर्तृत्व के प्रति आत्मा का चेतना ह्न यही ज्ञानचेतना है।

कर्मचेतना और कर्मफलचेतना को शास्त्रों में अज्ञानचेतना भी कहा जाता है। इसप्रकार मूलत: चेतना दो प्रकार की है - ज्ञानचेतना एवं अज्ञान चेतना। इसमें अज्ञानचेतना के दो भेद हैं ह्न कर्मचेतना, कर्मफलचेतना।

'मैं करूँ' 'मैं करूँ' ह्न इसप्रकार पर में करने का जो विकल्प है, करने के प्रति जो सतर्कता है, चेतनता है; यही कर्मचेतना है एवं उसके फल को भोगने के प्रति जो सतर्कता है, वह कर्मफलचेतना है।

एकेन्द्रियादि में कर्मफलचेतना की मुख्यता रहती है। वृक्ष के पास करने के लिए कुछ भी नहीं है; ठंडी लगी, गर्मी लगी, पानी मिला, नहीं मिला ह्न इसप्रकार वह सुख-दु:ख को भोगा ही करता है अर्थात् उसे करने की अपेक्षा भोगने का भाव ही अधिक रहता है ह्न यही कर्मफलचेतना है।

कर्मचेतना एवं कर्मफलचेतना दोनों ही ठीक नहीं है। कर्मचेतना की प्रशंसा की जाती है। कहा जाता है कि यह व्यक्ति कितना कर्त्तव्यनिष्ठ है; जबकि भोगों में मस्त कर्मफलचेतनावाले को कोई अच्छा नहीं मानता है।

जो आलसी प्रवृत्ति का है उसे जो भी अनुकूलता-प्रतिकूलता का वेदन हुआ, उसे मात्र भोग लेता है; वह कर्मफलचेतना की मुख्यतावाला व्यक्ति है।

किन्हीं अज्ञानियों में कर्मचेतना की मुख्यता पाई जाती है तो किन्हीं अज्ञानियों में कर्मफलचेतना की मुख्यता रहती है। आप ऐसी बहुत-सी माता-बहनों को देखेंगे कि जिन्हें खाना बनाने में जितना रस आता है, उतना खाना खाने में नहीं। बढ़िया पकवान बनाकर वे पुत्रादिक को खिलायेगी और फिर अंत में जितना बचा होगा, वह स्वयं खायेगी। उन्हें खाने के प्रति उतनी सतर्कता नहीं है, जितनी सतर्कता खिलाने के प्रति है। वे कर्मचेतना की प्रधानतावाली हैं।

कुछ लोग खाना बनाने में महाआलसी होते हैं। वे मात्र प्रशंसा करते हैं कि 'यह बहुत बढ़िया बना' 'आज जैसा बना; वैसा तो मैंने कभी नहीं खाया'; परंतु उन्हें करने के प्रति कोई सतर्कता नहीं होती, वे मात्र फल में ही चेतते हैं। ऐसे भोगने की प्रधानतावाले जीव कर्मफल चेतनावाले हैं।

अब ज्ञानचेतना की बात करते हैं। अर्थविकल्प वह ज्ञान है। स्व-पर के विभागपूर्वक अवस्थित विश्व अर्थ है। उसके आकारों का अवभासन विकल्प है। जिसप्रकार दर्पण के निज विस्तार में स्व और पर आकार एक ही साथ प्रकाशित होते हैं; उसीप्रकार जिसमें एक ही साथ स्व-पराकार अवभासित होते हैं ह्न ऐसा अर्थविकल्प ही ज्ञान है।

इसमें आचार्य ने सम्पूर्ण विश्व के स्व और पर ह्न इसप्रकार दो विभाग कर भेदविज्ञान की बात की है। सम्पूर्ण विश्व को स्व और पर के रूप में जानना यही ज्ञान है। स्व और पर रूप में विभाजित सम्पूर्ण विश्व ही अर्थ है। देखो ! यहाँ आचार्यदेव ने ज्ञान का स्वरूप ही विकल्पात्मक बताया है। **(क्रमश:)**

अक्टूबर शिविर की पत्रिका
दिनांक 6 से 15 अक्टूबर, 2005 तक

अक्टूबर शिविर की पत्रिका
दिनांक 6 से 15 अक्टूबर, 2005 तक

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. **भीलवाड़ा निवासी** श्री चांदमलजी पाटोदी का दिनांक 26 अगस्त, 2005 को शांतभावपूर्वक देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त धर्मप्रेमी एवं स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। आपकी स्मृति में आपके बडे भाई श्री ज्ञानमलजी पाटोदी की ओरसे जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **तलोद निवासी** श्री ताराचन्दजी मफतलालजी गांधी का दिनांक 16 अगस्त, 05 को निर्मलभावपूर्वक देहावसान हो गया है। गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान से जुड़कर उसके प्रचार-प्रसार हेतु आप आजीवन संलग्न रहे।

जयपुर शिविरों में भी आप समय-समय पर पधारते थे। साथ ही अनेक संस्थाओं को आपके द्वारा आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया गया। अहमदाबाद के निकट बन रहे चैतन्यधाम में भी आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/-रुपये प्राप्त हुये।

3. **सिवनी निवासी** श्रीमती सुलोचनाजी जैन का 17 अगस्त, 2005 को देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में श्री महेन्द्रकुमारजी की ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 202/-रुपये प्राप्त हुये।

4. **कोलकाता निवासी** स्व. श्री रतनलालजी गंगवाल की मातुश्री श्रीमती मनफूलाबाई गंगवाल का देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त धार्मिक एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थी।

5. **नागपुर निवासी** श्री कुन्दनलालजी मोदी का दिनांक 4 सितम्बर, 2005 को छिन्दवाड़ा में शांतपरिणामपूर्वक देहावसान हो गया है। आप श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर के संरक्षक थे। साथ ही स्वाध्यायप्रिय एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे।

6. **राजकोट निवासी** श्री भरतभाई एवं कमलेशभाई की मातुश्री श्रीमती रेवाबेन नागरदास टीम्बडीया का 88 वर्ष की उम्र में दिनांक 25 जुलाई को कोलकाता में देहावसान हो गया।

पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य के फलस्वरूप ही आप जीवनपर्यंत तत्त्वज्ञान से जुडी रही। कोलकाता में सम्पन्न होनेवाले आगामी पंचकल्याणक हेतु वे यहाँ पधारी थी। आप श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की संरक्षक थी।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही कामना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

ध्यान दें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन रात्रि 10.20 से 10.40 बजे तक प्रसारित हो रहे हैं। प्रवचन के प्रसारण में किसी वजह से 5-10 मिनिट की देर भी हो सकती है।

यदि निर्धारित समय से 10 मिनिट बाद तक भी प्रवचन प्रारंभ नहीं हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 094140 79772 या (0141) 2705581 नं. पर सम्पर्क करें।

सार समाचार

➔ भारत-पाक सम्बन्धों को मजबूत बनाने की प्रक्रिया में एक और नया अध्याय जोड़ते हुए दोनों देशों ने कुल 583 नागरिकों को रिहा किया।

➔ राज्यवर्द्धन सिंह राठौड ने बैंकाक में चल रही एशियाई क्ले शूटिंग की डबल ट्रेप स्पर्द्धा में स्वर्णपदक जीता।

➔ ब्रिटेन प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री मनमोहनसिंह से कई महत्त्वपूर्ण मुद्दो पर चर्चा तथा आतंक के खिलाफ संयुक्त अभियान प्रारंभ करने पर जोर।

➔ अमेरिका को 9/11 के हमले की चौथी बरसी पर आतंकवादी संगठन अलकायदा द्वारा फिर से धमकाया।

➔ वाजपेयी ने किया खुराना के निष्कासन का विरोध।

➔ राजस्थान में कई स्थानों पर भारी वर्षा।

➔ पीपुल फॉर एनीमल्स की अध्यक्ष मेनका गांधी ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर भरतपुर (राज.) स्थित घना अभयारण्य में हुए बंदरों के साथ क्रुरता पर सी.बी.आई जाँच की माँग की।

हार्दिक धन्यवाद !

श्रीमती कस्तुराबाई रगबिया धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालालजी रगबिया, मन्दसौर (म.प्र.) की ओर से वीतराग-विज्ञान (मासिक) को परम संरक्षक के रूप में 15,000/- रुपये प्रदान किये गये; एतदर्थ बहुत-बहुत धन्यवाद ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

06 से 15 अक्टूबर	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
16 से 23 अक्टूबर	**दिल्ली**	**समयसार गोष्ठी**
25 से 29 अक्टूबर	**देवलाली**	**विधान**
30 अक्टू. से 01 नवम्बर	**धरमपुर**	**दीपावली**
06 नवम्बर	**जयपुर**	**गिरनार रैली**
16 से 21 नवम्बर	**किशनगढ़**	**पंचकल्याणक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (द्वितीय) 2005

J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127